JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों का छात्रावास में जीवन: एक संक्षिप्त परिचाय

डॉ सुनील कुमार यादव (असिस्टेंट प्रोफेसर)

नीलम जायसवाल (शोध छात्रा)

श्री दुर्गा जी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

चण्डेश्वर आजमगढ.

सारांश:

वर्तमान समय की शिक्षा पद्धति में वह शक्ति व उद्देश्यों की पूर्ति की योग्यता प्रतीत नहीं होती जो किसी भी मानव में मनुष्यता के बीज अर्थात श्रेष्ठता के विचार आरोपित किये जा सकें। साथ ही शारीरिक मानसिक और आत्मिक बल भी बढ़ाया जा सके। आधुनिक युग शिक्षा के उद्देश्य तो केवल ऐसी शिक्षा को देना है जिससे अधिक से अधिक अर्थ का आगम हो और उसी के लिए बौद्धिक विकास की परिकल्पना है। उस विकास के साधन उचित हैं अथवा अनुचित यह सोचना आज की शिक्षा पद्धति की कार्य योजना में नहीं है। एक छात्र प्रशासक डॉक्टर या इंजीनियर आदि कुछ भी किन्हीं भी तरीकों से बने। परन्तु बने अवश्य यह आज के अभिभावक शिक्षाविद् और राजनेता चाहते हैं। उसमें नैतिकता एवं श्रेष्ठ मानवोचित गुणों का समावेश हुआ या नहीं यह उनकी परिकल्पना से दूर है। वह आचरणहीन स्वार्थ की पराकाष्ठा के मूर्त रूपधारी पैसा कमाने की मशीन बने। उसके व्यवसाय से व्यक्तिगत पारिवारिक सामाजिक भौतिक पर्यावरण दूषित हो इसकी चिन्ता उन्हें नहीं। इसी प्रकार के अन्य उद्देश्यों में मल्टीनेशनल कम्पनियों में नौकरी द्वारा आजीविका को प्राप्त करना या कहिए भौतिक संसाधनों को जुटाना मुख्य है और उसी से समस्त लोगों को सुख शान्ति प्राप्त करवाने के उपाय किये जाते हैं।

कूट शब्द: मनुष्य, समाज, शिक्षा, छात्रावास, प्रवृत्ति, मनोदशा।

प्रस्तावना:

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और कुछ सीखने की योग्यता ही उसे अन्य प्राणियों से उच्च स्थान दिलाती है। वह बुद्धि- संपन्न है जिससे वह अपनी प्रवृत्ति को वातारण और समाज की आवश्यकता के अनुकूल ढाल लेता है।

शिक्षा उसकी बुद्धिमत में और वृद्धि करती है और उसे जीवन में तरक्की करने के लिए और अधिक सक्षम बनाती है शिक्षा यह प्रक्रिया है जो मानव को ज्ञानार्जन करने में प्रेरक दृष्टिकोण प्रदान करती है ।

“शिक्षा वह प्रक्रिया है जिससे और जिसके द्वारा युवाओं का ज्ञान, चरित्र और व्यवहार एक सांचे और आकार में ढलता है ।" प्रोफेसर ड्रेवर

यह एक रचनात्मक प्रक्रिया है जो हमें ज्ञान सम्पन्न बनाती है और निजी व्यक्तिव के सभी पहलुओं से अवगत करती है जैसे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक। संक्षेप में शिक्षा मानव का सम्पूर्ण संतुलित और सर्वोतमुखी विकास कर उसे सभ्य परिपक्व और जिम्मेदार सामाजिक सदस्य बनाकर एक गतयात्मक व्यक्तित्व प्रदान करती है।

आदि मानव के लिए रोटी, कपड़ा और मकान ही उनकी प्राथमिकताएं थीं। यही आवश्यकताएँ समाज की प्रगति के साथ जैसे सामाजिक और मनोवैज्ञानिक सरोकारों के रूप में शिक्षा, स्वास्थ्य आदि कारणों से बढ़ती गई। मानव को इन आवश्यकताओं को जैविक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक सरोकारों के रूप मे वर्गीकृत किया जा सकता है। मनुष्य ने इन सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए काफी प्रगति की है और शिक्षा ने मानव के आदिम विकास से अब तक उसके निरंतर विकास में अहम भूमिका निभाई है।

“शिक्षा हमारे पल-पल परिवर्तित सामाजिक वातावरण के अनुकूलन की विकासात्मक शक्ति है।” पी. सी. बनर्जी

शिक्षा हमारे व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करती है और यह व्यक्तित्व तरक्की और विकास के साथ - साथ सामाजिक प्रदेश के लिए भी आवश्यक है। आमतौर पर यह समझ लिया जाता है कि शिक्षा का अभिप्राय मात्र ज्ञान का प्रेषण करना है। जबकि शिक्षा को ज्ञान की प्रेषणीय शर्तों के रूप में कतई नहीं माना जा सकता क्योंकि यह तो व्यक्ति का व्यवहार है जो एक वास्तविक अन्तर उपस्थित करता है। इसलिए शिक्षा ज्ञान के हस्तांतरण अथवा प्रेषण के अलावा व्यवहार को भी प्रभावित करती है। अत : शिक्षा का अभिप्राय सिर्फ ज्ञान प्राप्ति न होकर जीवन उन्नत बनाने से भी होता है।

“हम जितना जानते हैं, उससे कहीं अधिक जानने योग्य शेष है।” अरस्तु

स्कूलों और कालेजों में बहुत-से विद्यार्थी दूर स्थानों से पढ़ने के लिए आते हैं। वे प्रतिदिन घर से आकर पुनः वापस लौट नहीं सकते। इसलिए वे छात्रावास में रहते हैं। बहुत-से ऐसे विद्यार्थी भी छात्रावास में रहते है, जिनका घर दूर नहीं है। इसका कारण यह है कि छात्रावास में उन्हें अध्धयन के लिए सुविधाएँ मिलती हैं।

परिचय छात्रावास:

छात्रावास का जीवन बड़ा आनंददायक है। छोटे-छोटे लड़के और लड़कियाँ घर पर अपने माता-पिता और उम्र में बड़े लोगों की कड़ी निगरानी में रहते हैं। वे स्वतंत्रतापूर्वक न बातचीत कर सकते हैं और न घूम सकते हैं। छात्रावास में पहले-पहल वे मर्यादित स्वतंत्रता के वातावरण में साँस लेते हैं। अपनी उम्र के लड़के और लड़कियों के साथ वे स्वतंत्रतापूर्वक मिलते है। छात्रावास के जीवन में छात्रावास में रहने वाले छात्रों को अपने मानसिक एवं शारीरिक विकास के लिए पूर्ण अवसर मिलता है। छात्रावास में व्यायाम और खेल-कूद का प्रबंध रहता है। उन्हें कड़े

अनुशासन में रहना पड़ता है। उन्हें छात्रावास के नियमों का पालन करना पड़ता है। हर एक छात्रावास में एक अधीक्षक रहते है। वे छात्रावास में रहने वालों के स्वास्थ्य एवं चरित्र की देखभाल करते है। छात्रावास में रहनेवालों को उनकी आज्ञा का पालन करना पड़ता है। छात्रावास में रहनेवाले छात्रों एवं अधीक्षक के बीच प्रायः अच्छा संबंध रहता है। अधीक्षक छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों को अपनी संतान समझते हैं। पढ़ने के समय विद्यार्थियों को पढ़ना पड़ता है। छात्रावास में वाद- विवाद-समितियाँ एवं पुस्तकालय भी रहते हैं। छात्रावास में रहनेवाले विद्यार्थी पुस्तकालय से किताबें लेते हैं और दैनिक पत्र वहाँ पढ़ते हैं। वे वाद-विवाद में भी भाग लेते हैं। इस तरह उनके शरीर और मस्तिष्क दोनों का विकास होता है।

लाभ:

छात्रावास के जीवन की अनेक खूबियाँ हैं। छात्रावास में लड़कों को अध्ययन के लिए बहुत सुविधाएँ मिलती हैं। उनको कुछ नियमों का पालन करना पड़ता है। इसलिए वे अनुशासन सीखते है। उनको प्रत्येक काम निश्चित समय पर करना पड़ता है। इस प्रकार वे नियमित आदतें डालते हैं। वे एक-दूसरे को एक परिवार के सदस्य समझते हैं। वे एक-दूसरे के सुख-दुःख में हाथ बाँटना सीखते हैं। छात्रावास चरित्र-निर्माण के लिए एक आदर्श स्थान है। यह वास्तविक जीवन के लिए उपयोगी प्रशिक्षण देता है।

हानि:

कोई भी चीज पूर्णतः अच्छी नहीं होती, अतः छात्रावास के जीवन में भी कुछ त्रुटियाँ हैं। छात्रावास में छोटे बच्चे और बच्चियाँ अपने माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों के प्यार एवं संरक्षण से वंचित हो जाते हैं।

इसके अलावा छात्रावास में विद्यार्थी प्रायः बहुत खराब भोजन पाते हैं। भोजन रसोइयों द्वारा तैयार किया जाता है और वे ही उसकी व्यवस्था भी करते हैं। वे सस्ता और खराब सामान खरीदते हैं। वे घर की तरह विविध व्यंजन तैयार नहीं कर सकते है।

छात्रावास के नुकसान:

कानूनी रूप से एक अपार्टमेंट में छात्रावास खोलने से पहले, आपको इस व्यवसाय के सभी विपक्षों को जानने की जरूरत है।

सभी छात्रावासों को कमरे से छुटकारा नहीं मिल सकता है। आम तौर पर, पर्यटकों को एक बड़े कमरे में बिस्तर पर प्रदान किया जाता है। एक कमरे में अनधिकृत लोगों के साथ रहने के लिए हर कोई सहज नहीं होगा। कानूनी रूप से अपार्टमेंट में छात्रावास खोलने से पहले, आपको मूल्यवान चीजों के लिए भंडारण स्थान की देखभाल करने की आवश्यकता है। मेहमानों के लिए एक बहुत बड़ी समस्या – मूल्यवान चीजों को छोड़ने के लिए, क्योंकि कमरे में कई अपरिचित लोग हैं।

इसके अलावा कुछ हद तक समग्र बाथरूम भी आगंतुकों को डराता है।

- **सबसे पहले, उस पर जाना असंभव है, क्योंकि वहां कोई है।**
- **दूसरा, यहां तक बहुत अच्छी सफाई के साथ यह NO Hygienically है।**

हॉस्टल में प्रस्ताव नहीं है क्योंकि यह एक ऐसा स्थान है जहां आप रात को खर्च करने की लागत खर्च कर सकते हैं, न कि पांच सितारा होटल। और यह कई आगंतुकों गायब हो जाता है।

एक ऋण और व्यापार के पक्ष में है- छात्रावास के लिए कमरे का चयन करना काफी मुश्किल है। आखिरकार विशेष आवश्यकताओं को प्रस्तुत किया जाता है।

ऋण यह है कि विपणन गठजोड़ हमारे देश में बहुत कमजोर रूप से विकसित होते हैं, हालांकि यूरोप में यह अभ्यास व्यापक है। यह हॉस्टल के मेजबान का एक समझौता है, उदाहरण के लिए एक कैफे मालिक के साथ, आस-पास काम कर रहा है, मेहमानों को छूट के साथ नाश्ते मुक्त नाश्ते या नाश्ते करने के लिए।

एक और बिंदु जो कानूनी रूप से एक अपार्टमेंट में छात्रावास खोलने से पहले सोचने लायक है, यूरोपीय मानकों के लिए कमरे का अनुपालन है। बेशक हमारे देश में ऐसे कोई मानक नहीं हैं, लेकिन ऐसे पत्राचार हालांकि इसकी लागत बहुत अधिक होगी जल्द ही आभारी मेहमानों का भुगतान करेगी।

अधिकांश उद्यमी कानूनी रूप से अपार्टमेंट में छात्रावास खोलने के बाद, तय करें कि मध्यस्थों की मदद के बिना बेहतर काम करना है। सबसे पहले हां लेकिन समय के साथ यह लक्षित दर्शकों और होटल के एक छोटे से रोजगार की संकुचन का कारण बन सकता है।

छात्रावास में रहने वाले छात्रों का मनोदशा:

घर से दूर रहना एक राक्षसी काम लगता है। यदि आप एक छात्र हैं और एक कॉलेज के छात्रावास में रह रहे हैं, तो कई तरह की समस्याएं आपको परेशान कर रही होंगी।

ये समस्याएं अक्सर छात्रों के लिए गंभीर मनोवैज्ञानिक मुद्दे पैदा करती हैं और इसलिए, उन्हें पता होना चाहिए कि उनसे कैसे निपटा जाए।

अवसाद और चिंता:

तमाम समस्याओं में से डिप्रेशन हॉस्टल में रहने वाले छात्रों पर भारी पड़ता है। वे परीक्षा, असाइनमेंट और अकेलेपन के भारी बोझ तले दबे हैं। अगर वे अवसाद से पीड़ित हैं, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। रहने की अजीब स्थिति और भोजन की उपलब्धता छात्रों के लिए स्थिति को और खराब कर देती है। घर का बना खाना न खाने से उनका व्यवहार पूरी तरह से बदल जाता है। ये सभी मुद्दे इन छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन में परिलक्षित होते हैं।

ये चिंता विकार मुख्य रूप से छात्रों के अनुसंधान और विश्लेषणात्मक कौशल को प्रभावित करते हैं। वे ज्यादातर अपने शिक्षकों से असाइनमेंट प्राप्त करते हैं जैसे कि एक लेख लिखना, एक कविता, जटिल गणितीय समस्याओं को हल करना या यहां तक कि एक मृत्यु निबंध लिखना जिसमें उन्हें अपने प्रियजनों के बारे में लिखना है जो इस दुनिया से चले गए हैं। छात्रों के लिए ये सभी कार्य लगभग असंभव हैं जो पहले से ही अवसाद और चिंता के मुद्दों का सामना कर रहे हैं क्योंकि उनकी मानसिक शक्ति ऐसे कार्यों से निपटने के लिए तैयार नहीं है। उनके लिए सबसे अच्छा समाधान यह है कि अनुकूलित मौत निबंध लेखन के लिए एक लेखन सेवा से परामर्श करें ताकि गंभीर चिंता के हमलों से बचने के लिए खुद को सोच और लिख सकें।

प्रवृति:

छात्रावास में रहने से छात्रों के रूखे और मूडी बनने की संभावना रहती है। हां, बाहरी मदद की कमी इस प्रभाव के लिए जिम्मेदार प्रमुख कारक है। जीवन जीने के ऐसे अकेले चरण का अनुभव करना उनके लिए बहुत परेशान करने वाला हो सकता है। घर और मां-बाप की यादें इन जख्मों में ईंधन भर देती हैं. यदि आप एक छात्रावास में रहते हैं, तो ये मनोवैज्ञानिक समस्याएं आपके लिए कुछ नहीं होनी चाहिए। उन्हें कभी भी हल्के में न लें। इसके बजाय, उन्हें हटाने के लिए आगे बढ़ें। दोस्तों की संगति में रहने की कोशिश करें और उनके साथ घूमें। छात्रावास के कमरे में अधिक समय तक रहने से आपको घुटन का अनुभव हो सकता है।

सकारात्मक आदतें स्थापित करें:

पसंदीदा नेटफ्लिक्स शो देखना या जिम जाना आपको सुकून का एहसास करा सकता है। छात्रावास के जीवन से जुड़े मनोवैज्ञानिक मुद्दों के इलाज के लिए यह सही तरीका है।

उपसंहार:

फिर भी, इन सभी छोटी त्रुटियों के बावजूद छात्रावास का जीवन विद्यार्थियों के लिए यथार्थतः आनंददायक और आदर्श है।

संदर्भ:

1. चौबे, एस. पी. एण्ड चौबे अखिलेश: Philosophical and Sociological Foundation of Education, Vinod Pustak Mandir,
2. डिवी, जैन, "Democracy and Education", The Macmillan Co.. New York, 1961 नन्म, टी. पी. एजूकेशन, इट्स डाटा एण्ड फर्स्ट प्रिंसिपल्ज, तीसरा संस्करण, (Edward Amold (Publishers) Ltd.. London
3. प्रिंस किंग्सले; "Education and Philosophical Thought" Allya and Bacon, Inc. Roston, 1965, राधा कृष्णन एस; "True Knowledge" Orient Paper backs, New Delhi. 1984,

4. तनेजा, वी. आर. "Educational Thought and Practice", Sterling Publishers, New Delhi, 1998.

5. Agrahari, G.L. (1999) : An analytical study of study habits and attitude of gifted tribals students of Higher Secondary level.